© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 08 | October – December 2017

वैश्वीकरण के पर्यावरण पर प्रभावः एक मूल्यांकन

Sachin
Assistant Professor
D.G. College, Gurugram

Pradeep Kumar
Student (M.Com.)
Govt. P.G. College, Jind

सारांशः–

वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत, पूंजी और वस्तुओं का एक देश से दूसरे देश को मुक्त प्रवाह होता है। वैश्वीकरण में पूँजी का प्रवाह, सूचनाओं का आदान-प्रदान, तकनीकी का विकास, योग्य लोगों को जहाँ अवसर प्राप्त हो रहे हैं तो वही तीव्र औद्योगीकरण के कारण पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। जिससे प्राकृतिक आपदाएं एवं मानव निर्मित आपदाएं आ रही है। वैश्वीकरण के नाम पर प्रतिकूल जैव प्रोद्योगिकी की घुसपैठ चिन्ता का विषय बन गया है।

मुख्य शब्दः– वैश्वीकरण, पर्यावरण, संयोजन, प्रभाव, प्रदूषण।

परिचयः– वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ स्थानीय या क्षेत्रीय वस्तुओं या घटनाओं के विश्व स्तर पर रूपांतरण की प्रक्रिया है। इसे एक ऐसी प्रक्रिया का वर्णन करने के लिए भी प्रयुक्त किया जा सकता है जिसके द्वारा पूरे विश्व के लोग मिलकर एक समाज बनाते है तथा सामाजिक और राजनीतिक ताकतों का एक संयोजन है।[1] वैश्वीकरण की प्रक्रिया के अन्तर्गत, पूंजी और वस्तुओं का एक देश से दूसरे देश को मुक्त प्रवाह होता है। एक देश के व्यापारी दूसरे देश के निर्माण, सेवा, ज्ञान तथा अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों में मुक्त रूप से पूँजी निवेश करते है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कुकुरमत्तो की तरह उग रही हैं तथा अल्प विकसित देशों क देशी निर्माण क्षेत्र पर अपना आधिपत्य जमा रही हैं।[2]

परिर्वतन प्रकृति का सार्वभौमिक नियम है। परिवर्तन के अभाव में महापरिर्वतन (विनाश) प्रारंभ हो जाता है। महाकवि जयशंकर प्रसाद ने कामायनी में लिखा है–

''पुरातना का यह निर्मोक,
सहन करती न प्रकृति पल एक।
नित्य नूतनता का संचार,
किए है परिवर्तन में टेक।।''

समय अबाध गति से चलता रहता है। उसके प्रवाह में जहां एक दिशा में बहुत कुछ बहता जाता है। वहीं दूसरी दिशा में बहुत कुछ आ जाता है। सामाजिक सोच के अनुरूप विकास का पथ प्रशस्त होता है। आज वैश्वीकरण का स्लोगन तेजी से चल पड़ा है। ऐसा लगता है, कोई नयी तकनीक आ गयी है जिससे समूची दुनिया को हथेली पर रखकर उलट-पुलट कर देख सकते हैं। किन्तु क्या शब्दाडम्बर मात्र से सम्पूर्ण विश्व को एक लय में बांधा जा सकता है? भारत जैसे देश में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की अवधारणा अति प्राचीन है। हम सम्पूर्ण जगत को एक ईश्वर की सन्ताने मानकर उससे बन्धुत्व भाव रखते हैं। आज जिस परिप्रेक्ष्य में भूमंडलीकरण शब्द का प्रयोग किया जा रहा है वह सर्वथा नवीन अर्थ का घोतक है। सम्पूर्ण विश्व को तकनीकी विकास के स्तर पर एकीकृत करने का भाव वैश्वीकरण है।[3] वैश्वीकरण प्रक्रिया है जिसके द्वारा सभी लोगों और समुदायों के लिए एक तेजी से आम आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण का अनुभव करने के लिए

आते है। परिभाषा के अनुसार प्रक्रिया दुनिया भर में हर किसी को प्रभावित करता है। एक और अधिक एकीकृत विश्व समुदाय दोनों लाभ और सभी के लिए समस्याओं को लाता है; यह देशों, समुदायो और व्यक्तियों और यह दोनों में वृद्धि कर सकते हैं और सीमा स्वतंत्रता और मानव अधिकारों के बीच आर्थिक, राजनीतिक और संस्कृतिक शक्ति संतुलन को प्रभावित करता है।[4]

समाजशास्त्र के शास्त्रीय रचनाओं ने भी वैश्विक पर्यावरणीय परिस्थितियों के उपजने के लिए अपनी -अपनी व्याख्याएं दी थी। दुरखाइम (1815) का मानना था कि कतिपय सांस्कृतिक मूल्य जैसे आधुनिकीकरण, नगरीकरण तथा उपनिवेशवादी पश्चिमीकरण ने पर्यावरण को प्रभावित किया और समस्याओं को जन्म दिया। यह व्याधिकीय (Pathological Social Facts) सामाजिक तथ्यों के उदय की देन थी। मार्क्स (1967) के लिए (1959) प्रकृति तथा मनुष्य के बीच का द्वन्द्व इन परिस्थितियों के लिए जिम्मेदार है। वैबर (1959) का मत उस पूंजीवादी व्यवस्था के साथ जुड़ा हुआ है जो प्रकृति के अधिकाधिक दोहन में विश्वास करता है।

यह विश्वास किया जाता है कि पर्यावरण एक वैश्विक समस्या है। एक देश का पर्यावरणीय असंतुलन विश्व स्तर की समस्याएं पैदा कर सकता है। अमेरिका के ग्रीन हाउसो और उससे पड़ने वाले ओजोन पर प्रभावों की चर्चा बराबर की जाती रही है। इसीलिए वैश्वीकरण का एक पक्ष पर्यावरण का रहा है। इन तथ्यों का संबंध वैश्विक पर्यावरण के परिवर्तन के साथ भी जोड़ा जा सकता है। विश्व वातावरण के इतिहास में उन परिवतनां की चर्चा की है, वैश्विक स्तर पर ये समस्याएं अभी बनी हुई है।[5]

प्रदूषण के खतरे पर अर्थशास्त्रियों का ध्यान नहीं था। धीरे-धीरे औद्योगिक विकास की गति बढ़ने और सकेन्द्रित होने के कारण यह यह लगने लगा कि यदि विकास अनियन्त्रित तरीके से जारी रहा तो विश्व में मौजूदा संसाधनों की कमी होते जाने से आने वाले समय में विकास की गति को बनाए रखना संभव नहीं रह जायेगा। इसीलिए 1970 के आस-पास अर्थशास्त्री सम्पोषित विकास पर गम्भीरता से सोचने लगे थे। सम्पोषित विकास के लिए पर्यावरण की रक्षा एक महत्वपूर्ण मामला था। इसीलिए अर्थशास्त्र के विषय क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण जैसे विषय भी आ गये।[6]

उद्देश्यः-

(1) वैश्वीकरण के अर्थ को समझना व जानना।

(2) पर्यावरण पर वैश्वीकरण के प्रभावों का आंकलन करना।

शोध पद्धतिः- शोध-पत्र द्वितीयक डाटा पर आधारित है। डाटा प्रकाशित-पत्र, किताब, जर्नल, समाचार-पत्र, इंटरनेट साईट आदि से लिया गया है। शोध-पत्र में वैश्वीकरण का पर्यावरण पर प्रभाव को विश्लेषणात्मक तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

परिणामः- ''वैश्वीकरण'' एक ऐसा शब्द है जो व्यापार और संचार के माध्यम से राष्ट्रों की बढ़ती अंतरंगता का वर्णन करता है। इसमें सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि से दोनों सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव हैं। इसका पर्यावरण पर भी प्रभाव पड़ता है, जो कई योगदान कारकों के साथ एक जटिल मुदा है। भूमंडलकरण के नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभावों की मिटाने के लिए एक महत्वपूर्ण मुदा जारी रहेगा क्योंकि वैश्वीकरण बढ़ेगा।

संरचना प्रभावः- व्यापार के उदारीकरण, या प्रतिबंध, टैरिफ और मुक्त व्यापार के लिए अन्य बाधाओं में कमी, देश की उद्योग रचना पर एक प्रभाव है, जो सकारात्मक या नकारात्मक पर्यावरणीय प्रभाव डाल सकता है। यदि उदारीकरण के कारण देश के औद्योगिक या विनिर्माण क्षेत्र में वृद्धि हो रही है, तो इसका परिणाम देश के

प्राकृतिक संसाधनों पर अधिक प्रदूषण और अधिक तनाव हो सकता है। दूसरी तरफ, अगर व्यापार उदारीकरण एक भारी उद्योग की एकाग्रता और सेवा क्षेत्र में बढ़ती हुई वृद्धि में नतीजा है, जो इसके विपरीत उस देश के लिए सच हो सकता है।

संसाधनों का अत्यधिक लाभ– वैश्विक मांग को पूरा करने के लिए प्रतिस्पर्धा के कारण प्राकृतिक संसाधानों का अधिकरण हो सकता ह। उत्पादों के निर्यात करने के अधिक अवसर के साथ, कई देशों ने अपने संसाधानों को उत्पादन में अधिकतम करने के लिए सीमा तक धकेल दिया है। कटाई के लिए टिकाऊ प्रथाओं के बिना, संसाधनों का उपयोग न किए जाने के बिन्दु पर किया जा सकता है। वनों की कटाई और अधिकता के कारण दुनिया भर के व्यापार के उदारीकरण से उत्पन्न हुई समस्याओं के उदाहरण हैं।[7]

आर्थिक खुलेपन का प्रभाव– सामान्य तौर पर, आर्थिक खुलेपन (मुख्य रूप से व्यापार और निवेश उदारीकरण के माध्यम से) में वृद्धि हुई, सबसे खराब स्थिति में, स्थानीय प्रदूषण के उत्सर्जन पर एक सौम्य प्रभाव होता है। उदाहरण के लिए, यह पाया गया है कि व्यापार की तीव्रता में 10% की वृद्धि सल्फर डाइऑक्साईड (एसओ$_2$) सांद्रता में लगभग 4% से 9% की कमी हो जाती है। अन्य संसाधनों से पता चला है कि खुलेपन को SO_2 और नाइटस डाइऑक्साईड (एन एक्स) पर लाभकारी प्रभाव पड़ता है, लेकिन Particulates matter (PM) पर कोई सांख्यिकीय प्रभाव नहीं पड़ता। फिर भी एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि व्यापार की तीव्रता प्रदूषकों की भूमि रिलीज को बढ़ाती है, लेकिन वाय, पानी, और भूमिगत रिलीज पर या तो कोई सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है या नहीं।[8]

पशुधन नस्लों का विलुप्त होना– वैश्वीकरण के रूप में दुनिया भर में प्रौद्योगिकियों के प्रसार और सभी अर्थव्यवस्थाओं के नेटवर्किंग–प्रगति, पशुधन नस्लों का भी विलुप्त होने का खतरा बढ़ रहा है। बीसवी शताब्दी के दौरान, हॉल और रूएन (1993) के अनुसार 3831 नस्लों या गधे की नस्ल की किस्में, पानी भैंस, मवेशी, बकरी, घोड़ा, सुअर और भेड़। अनुमान है कि 618 विलुप्त हो गए हैं।[9]

संयोजन प्रभाव– व्यापरिक उदारीकरण के कारण उद्योगों के संयोजन में परिवर्तन होने लगता है। पर्यावरणीय लागतों या तुलनात्मक विशेषज्ञता के कारण किसो देश में ऐसे उद्यमों का बढ़ना शुरू होता है जो अधिक मात्रा में जहरीली गैसों का उत्सर्जन करते हैं या अपशिष्ट का अधिक निर्माण करते हैं तो उस देश में वायुमण्डल तेजी से प्रदूषित होने लगता है। यदि उदारीकरण के कारण किसी देश में स्वच्छ उद्यम बढ़ने लगतं हैं तो वातावरणीय प्रदूषण कम होने लगता है। अर्थव्यवस्था में उद्यमों के संयोजन के बदलने से वातावरण पर जो प्रभाव पड़ता है उसे संयोजन प्रभाव कहते हैं।

तकनीकी स्थानान्तरण प्रभाव– वैश्वीकरण के दौर में उत्पादन तकनीक का तेजी स्थानान्तरण हो रहा है। यदि किसी क्षेत्र में विदेशी विनियोग का आना तेज गति से होता है और वह स्थानीय कम्पनियों का विस्थापन कर देने में सफल होता है तो पर्यावरण परिवर्तित हो सकता है। पर यदि मलिन उद्योगों का स्थानान्तरण हुआ तो वह स्थानीय पर्यावरण पर निश्चित ही बुरा असर डालेगा। विदेशी व्यापार के क्षेत्र में समय लागत और वास्तविक लागत घटाने की होड में अनेक नव प्रवर्तन ऐसे भी हो रहे हैं जिनका पर्यावरण पर अच्छा प्रभाव पड़ता है जैसे कण्टेनाईजेशन जिससे बन्दरगाहो पर जहाज से सामान उतारने–चढ़ाने में समय की बहुत बचत होने लगी है और बन्दरगाहों पर प्रदूषण कम होने लगा है।[10]

भारत पर असर– सर्वज्ञात है कि पश्चिमी देशों में मानव और प्रकृति का सम्बन्ध बिगड़ चुका है, जिसके कारण पर्यावरणीय संकट, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, मृदा प्रदूषण, जैसे सम्पदा-कर क्षरण आदि के रूप में भयानक स्थिति में पहुंच गये है। कुछ स्थितियाँ विश्व पर्यावरण के असंतुलन के लिए भी जिम्मेदार मानी जा रही है जैसे ओजोन परत का क्षरण, हरित गृह प्रभाव में असंतुलन के कारण विश्वव्यापी वायुमण्डलीय ताप की वृद्धि आदि। फिर भारत उन्ही मार्गों पर चलने के लिए आतुर है। उल्लेखनीय है कि वन विनाश के कारण भारत की जलवायु पर प्रतिकुल प्रभाव होने लगे हैं और महानगरों में वायु प्रदूषण भयानक स्थिति में पहुँच गया है फिर भी हम इन घटनाक्रमों पर उचित ढंग से ध्यान नहीं दे रहे हैं। भारत की विशाल जनसंख्या के लिए प्रकृति प्रदत्त जल स्त्रोतों को प्रदूषण फैलाने वाली प्रक्रिया को प्रश्रय दिया जा रहा है। वैश्वोकरण के नाम पर प्रतिकूल जैव प्रोद्योगिकी की घुसपैठ चिन्ता का विषय बन गया है। उल्लेखनीय है कि हरित-क्रांति, श्वेत क्रांति आदि के गंभीर परिणाम प्रकट होने लगे हैं। सड़कों पर बढ़ते वाहनों के कारण वायु प्रदूषण के बढ़ने की पूरी सम्भावना है।[11] तापमान मं वृद्धि भारत के पर्यावरण को प्रभावित करगी, खासतौर पर जल के स्त्रातों, समुंद्री जल स्तर और जैव विविधता पर, भोजन की कमी होगी, आजीविका के मौके कम होंगे। औरतों पर काम का बोझ बढ़ेगा, ग्लेशियर सिकुड़ने से पीने के पानी व सिंचाई व्यवस्था प्रभावित होगी, चक्रवातो से समुद्री संसाधनों पर निर्भर 2.7 करोड़ परिवार प्रभावित होंगे।

भारत की 65% जनसंख्या आजीविका के लिए खेती और उससे जुड़े उद्योगों-पयटन मत्स्य पर निर्भर है, इन पर पड़ा असर हमारी सामाजिक बदलाव, समानता की कोशिशों व ऊँची आर्थिक दर को प्रभावित करेगा।[12]

निष्कर्ष:– इस प्रकार हम देखते हैं कि वैश्वीकरण में पूँजी का प्रवाह, सूचनाओं का आदान-प्रदान, तकनीकी का विकास, योग्य लोगों को जहाँ अवसर प्राप्त हो रह हैं तो वहीं तीव्र औद्योगीकरण के कारण पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है जिससे प्राकृतिक आपदाएं एवं मानव निर्मित आपदाएं आ रही हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण जापान में 2011 में मार्च के महीने में आयी सूनामी जो प्राकृतिक आपदा थी परन्तु, उसके परिणाम स्वरूप रिएक्टरों से होने वाला विकिरण मानव निर्मित आपदा का सूचक है। जिससे मानव, स्वच्छ वातावरण, सन्तुलित विकास, स्वच्छ जल, स्वच्छ हवा पाने के अधिकार से वंचित हो रहे हैं। ये सभी कहीं न कहीं वैश्वीकरण के साथ जुड़े हुए हैं। इसीलिए आवश्यकता है कि वैश्वीकरण के दौर में एक ऐसे विकास और ऐसी नीति का प्रयोग किया जाए जिससे कि व्यक्तियों तथा नागरिकों के अधिकारों चाहे वे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक हो उनको अक्षुण्ण बनाये रखा जा सके।[13]

प्राकृतिक, प्रक्रियाओं में वैश्वीकरण ने प्राकृतिक प्रक्रियाओं को छेड़कर पर्यावरणीय संकट और समस्याओं को पैदा किया है। यह पूरी संभावना है कि भविष्य में हम मानव द्वारा उकसाई हुई प्रवृतियों के माध्यम से पर्यावरणीय समस्याओं का और अधिक विस्तार देखें। रौस घर चलते रहेंगे और पृथ्वी को और अधिक नुकसान होने की संभावना बढ़ जाएंगी।[14] अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भूमंडलीकरण के बढ़ते कदमो को रोक पाना शायद संभव न हो पाए, लेकिन इसकी जवाबदेही तय की जानी आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/ वैश्वीकरण

2. सिंह, शिव बहाल (2016), विकास का समाजशास्त्र, जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स, पृं0स.-180
3. द्विवेदी, विश्वनाथ (2012), ''वैश्वीकरण, विकास एवं पर्यावरण: एक विवेचन'', धर्मेन्द्र प्रताप शाही (संपादक), वैश्वीकरण, विकास एवं पर्यावरण, फैजाबाद: कोशल पब्लिशिंग हाउस, पृं0 स.-297
4. http://ifsw.org/policies/globalisation-and-the-environment
5. भार्गव, नरेश (2014), वैश्वीकरण: समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स, पृं0 स. -123-124
6. शुक्ल, पी.सी. (2012), '' वृद्धिमान व्यापारिक खुलापन और पर्यावरण'', धर्मेन्द्र प्रताप शाही (संपादक), वैश्वीकरण, विकास एवं पर्यावरण, फैजाबाद: कोशल पब्लिशिंग हाउस, पृं0 स.-25
7. https://bizfluent.com/info-8564715-negative-impacts-globalization-environment.ht
8. http://www.oecd.org/greengrowth/greening-transport/globalisation-transport-environment.htm
9 http://www.conservationandsociety. org/ article.asp? issn= 0972-4923; year=2003;volume=1;issue=1;spage=99; epage=111; aulast= Ehrenfeld
10. शुक्ल, पी.सी. (2012), '' वृद्धिमान व्यापारिक खुलापन और पर्यावरण'', धर्मेन्द्र प्रताप शाही (संपादक), वैश्वीकरण, विकास एवं पर्यावरण, फैजाबाद: कोशल पब्लिशिंग हाउस, पृं0 स.-29, 31
11. वर्मा, भरत मिलन (2012), ''भारत में भूमण्डलीकरण का प्रभाव'', धर्मेन्द्र प्रताप शाही (संपादक), वैश्वीकरण, विकास एवं पर्यावरण, फैजाबाद: कोशल पब्लिशिंग हाऊस, पृं0 स0 -392
12. झा, सुनीता (2012), ''वैश्वीकरण की दौड़ में पर्यावरणीय समस्या एवं समाधान के उपाय-ग्लोबल वार्मिंग'', धर्मेन्द्र प्रताप शाही (संपादक), वैश्वीकरण, विकास एवं पर्यावरण, फैजाबाद: कोशल पब्लिशिंग हाऊस, पृं0 स0 -356
13. सिंह, कुमार सौरभ (2012), ''वैश्वीकरण एवं पर्यावरण: मानव अधिकार पर प्रभाव'', धर्मेन्द्र प्रताप शाही (संपादक), वैश्वीकरण, विकास एवं पर्यावरण, फैजाबाद: कोशल पब्लिशिंग हाऊस, पृं0 स0 -388
14. भार्गव, नरेश (2014), वैश्वीकरण: समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, जयपुर: रावत पब्लिकेशन्स, पृं0 स.-126